मनुष्य को 'मनुष्य' बनाती है संस्कृति

एक वट वृक्ष के नीचे तीन संत बैठे थे। हरेक संत ने अपने-अपने समक्ष बहुत अच्छी तरह से पेंट किये हुए बोर्ड रखे थे। उस बोर्ड पर लिखी बात सभी को स्पष्ट रूप से दिखाई दे, इस तरह से सामने रखा था। एक बोर्ड पर लिखा था:- ''मनुष्य बनना है? तो यहाँ आइये।''

दूसरे बोर्ड पर लिखा था ''सत्ताधारी बनना है? तो यहाँ आइये।'' और तीसरे बोर्ड पर लिखा था:- ''करोड़पति बनना है? तो यहाँ आइये।'' दिन भर लोग आते रहे, बोर्ड पर लिखा हुआ पढ़ते रहे और तीनों संतों में से किसके पास जायें, उसका निर्णय कर उनके पास जाते रहे।

शाम हुई... तीनों संतों ने बोर्ड उठा लिया और आपस में बातचीत करने लगे। सबसे पहले 'करोड़पति बनना है?' बोर्ड वाले संत ने कहा:- 'मेरे पास एक हज़ार लोग आये। मुझे मिलने के लिए लोग आतुर थे और धक्का मुक्की करते थे।'

उसके बाद दूसरे संत ने कहा :- 'मेरे पास 'सत्ताधारी बनना है?' बोर्ड देख सात सौ लोग आये। हर एक की एक ही मांग थी कि सत्ता प्राप्ति के लिए शॉर्ट कट रास्ता बताइये या ऐसी कोई ताबीज़ हो, तो किसी भी तरीके से और किसी भी कीमत पर खरीदने के लिए तैयार हैं। राजकीय सत्ता में लगाई हुई पूंजी कई प्रकार से फायदेमंद होगी।'

अब प्रथम संत की बारी आई... उसने 'मनुष्य बनना है?' का बोर्ड अपने सामने रखा था। लोग बोर्ड पढ़ने के लिए रुकते थे, लेकिन पढ़ते ही वहाँ से खिसक जाते थे। उस संत ने कहा:- 'मनुष्य बनने की बेकार प्रवृत्ति से क्या प्राप्ति होगी! लोग ऐसी चर्चा करते थे। वे लोग कह रहे थे कि... संत कहते हैं कि सच्चे मनुष्य बनेंगे तो स्वर्ग मिलेगा! परन्तु ये तो एक आश्वासन है। सत्ताधीश बनने से या दम्पत्ति से स्वर्ग का सुख यहीं भोग सकते हैं। सभी मनुष्य बनने वाला बोर्ड पढ़कर मुझे टालते रहे। इसलिए शाम तक मेरे पास कोई भी नहीं आया।' - संत ने कहा।

संस्कृति मनुष्य को मनुष्य बनना सिखाती है। सभ्यता मनुष्य को आकर्षक बनना सिखाती है।

आज परिस्थितियां बदल गई हैं। 'बड़ा अधिकारी बनना', 'प्रथम नम्बर लेके आना' जैसा आशीर्वाद बेटे को देते हैं, लेकिन 'तू महान मनुष्य बनना', ऐसा आशीर्वाद कोई नहीं देता। 'धनवान बनना' इसने मनुष्य को इतना ज़्यादा अपने चंगुल में फँसा लिया है कि 'ज्ञानवान बनना', ऐसा आशीर्वाद देना किसी को याद ही नहीं आता!

माँ-बाप बच्चे को मंदिर में ले जाते हैं और वे जिस देवी-देवता को मानते हैं उनकी प्रार्थना करने को विवश करते हैं। एक बार एक बच्चे ने पत्थर की मूर्ति के पैर पड़ने के लिए ना कही, इसलिए उसके पापा ने उसके गाल पर थप्पड़ लगा दिया! पुजारी ये दृश्य देख रहा था। उसने बच्चे के पापा को कहा:- 'आपके विचार का अनुसरण करने की अपने बालक से ज़बरदस्ती नहीं करो। आपका बच्चा प्रतिभावान है और प्रतिभावान व्यक्ति खुद का पथ स्वयं ही निर्माण करते हैं। उसे अपना दीपक स्वयं ही बनने दो।'

सॉक्रेटिस प्रार्थना करते, लेकिन कोई दुनियावी सुख परम शक्ति से मांगते नहीं। वो कहते:- 'हे भगवान, मेरी प्रार्थना है कि मैं भीतर से बहुत सुंदर बनूँ।'

आज के जगत की यही समस्या है। आज के मनुष्य को बाहर से सुंदर दिखना है, लेकिन अंदर की कुरूपता निहारना नहीं है। 'होश' नहीं लेकिन 'जोश' आज के मनुष्य का लक्ष्य है।

एक महान विचारक ज़्यादा जोश की तुलना सोडा वॉटर की बोतल से करते हैं। जब सोडा वॉटर की बोतल खोली जाती है, उसके बाद गैस और बौछार उभरता नज़र आता है, जोकि थोड़े पल के बाद शांत हो जाता है। कुछेक मनुष्य का व्यक्तित्व भी इसी तरह ही है।

आज का मनुष्य 'महान' में खपने के लिए 'शॉर्टकट' अपनाने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानता है।

आजकल तरह-तरह के अन्वेषण हो रहे हैं, लेकिन मनुष्य के वासनाओं की रिफाइनरी आजतक खोजी ही नहीं गई। सच्चा मनुष्य बनने के लिए वासनाओं का परित्याग करना पड़ता है। स्कूल, कॉलेजों में वासनाओं की शुद्धि की शिक्षा देने के बदले वासनाओं को प्रोत्साहित करने का खेल खेला जा रहा है। 'बोर्ड में प्रथम नम्बर ले आना', 'क्रिकेट में मैन ऑफ द मैच बनना', 'कम्पीटिशन में विजयी होके आना', 'बड़ा ऑफिसर बनना' आदि प्रलोभनात्मक आदर्श बच्चों के समक्ष व्यक्त किया जाता है। लेकिन 'सदाचारी बनना', ये बात पाठ्यक्रम के बाहर का विषय बनता नज़र आ रहा है।

आजकल तरह-तरह के अन्वेषण हो रहे हैं, लेकिन मनुष्य के वासनाओं की रिफाइनरी आजतक खोजी ही नहीं गई। सच्चा मनुष्य बनने के लिए वासनाओं का परित्याग करना पड़ता है।

ऐसे करें डायबिटीज़... - पेज 4 का शेष

फूलों से प्राप्त शहद का सेवन किया जा सकता है। आजकल शहद डायबिटिक लोगों को दिया जाने लगा है, जिससे उनके ब्लड शुगर संतुलन में कोई खराबी नहीं होती।

✷ इस रोग में आलू और अरबी को छोड़कर हर प्रकार की सब्जी और हर प्रकार के खट्टे फल खाना लाभकारी है। पेशाब में शुगर आना बंद होने के पश्चात् केवल केला व आम छोड़कर हर प्रकार के ताजे फल खाये जा सकते हैं। बाज़ारी मिठाइयों की तरह ताज़े फलों की मिठास हानि नहीं करती।

✷ चिकित्सा अवधि में केवल सब्जियों और दही का प्रयोग करना चाहिए। भूख अधिक लगने पर दही की मात्रा बढ़ानी चाहिए या बादाम खाना चाहिए।

✷ जामुन डायबिटीज़ की प्रमुख प्राकृतिक औषधि है। जामुन के मौसम में प्रात: इच्छानुसार जामुन का सेवन करना चाहिए। जामुन का मौसम नहीं हो तो सलाद के पत्तों या करेलों या आँवलों का रस 50 ग्राम अथवा बेल पत्रों का रस सुबह-शाम औषधि के तौर पर लेना चाहिए।

✷ उपरोक्त उपचार अथवा शाक-सब्जियों पर लगातार रहने से रोग मुक्त होने के पश्चात् यदि शरीर का वज़न कम हो गया हो तो मट्ठा कल्प द्वारा वज़न बढ़ाया जा सकता है।

✷ पूर्ण स्वस्थ होने के पश्चात् चोकर समेत आटे की रोटी या मिस्सी रोटी और उबली सब्जियाँ खाना शुरू कर सकते हैं।

✷ कम से कम चिकित्सा अवधि में घी, मिठाइयाँ, चाय-कॉफी, मांसाहारी भोजन, नशीले पदार्थों का सेवन तथा चिन्ताएँ बंद रखना आवश्यक समझना चाहिए।

बुधनी-होशंगाबाद(म.प्र.)। माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता।

बिलासपुर-छ.ग.। छ.ग. योग आयोग बिलासपुर सम्भाग द्वारा सेवाकेन्द्र पर आयोजित 'मास्टर ट्रेनस' स्नेह मिलन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शांतनु,मुख्यालय संयोजक,मीडिया प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू तथा छ.ग. योग आयोग के अध्यक्ष कैबिनेट मिनिस्टर संजय अग्रवाल।

बिलासपुर-छ.ग.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् हाईकोई जज राम प्रसन्न शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रमा। साथ हैं ब्र.कु. गंगा तथा ब्र.कु. सुभाष।

केशोद-गुज.। श्री नवदुर्गा मंदिर के सन्यासी जगदीश बापू का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. नीलम,ग्लोबल हॉस्पिटल,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रूपा।

गया-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माबाबा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान बार काउंसिल के पूर्व प्रेसीडेंट भीम सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला।

सीतामऊ-म.प्र.। सेवाकेन्द्र के 10वें वार्षिकोत्सव का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ श्रेत्रीय समन्वयक ब्र.कु. हेमलता, बोहरा समाज के धर्मगुरू मो. हुज़ैफा, पूर्व विधायक राधेश्याम पाटीदार, विधायक हरदीप सिंह डंग, नगर पंचायत अध्यक्षा हंसा जी तथा अन्य।